

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 08-08-2025

विषय सूची

- » एम.एस. स्वामीनाथन की जन्म शताब्दी
- » भारत-रूस: औद्योगिक सहयोग और दुर्लभ मृदा खनिजों का निष्कर्षण
- » प्रधानमंत्री मोदी द्वारा किसानों, पशुपालकों और मछुआरों के हितों पर बल
- » 11वां राष्ट्रीय हथकरघा दिवस
- » भारत की चिकित्सा पर्यटन/मेडिकल टूरिज्म अर्थव्यवस्था
- » भारत में भूजल प्रदूषण

संक्षिप्त समाचार

- » नाउरू
- » विश्व व्यापार संगठन (WTO)
- » भारत पूर्वानुमान प्रणाली(BharatFS)
- » प्रोफिलैक्सिस
- » पश्चिमी घाट में नई लाइकेन प्रजाति की खोज
- » कर्नाटक कैबिनेट द्वारा देवदासी पुनर्वास विधेयक को मंजूरी
- » कोलोराडो नदी

एम.एस. स्वामीनाथन की जन्म शताब्दी

संदर्भ

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 7 अगस्त को एम.एस. स्वामीनाथन जन्म शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया, जो एम.एस. स्वामीनाथन की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया।

एम.एस. स्वामीनाथन

- उन्हें भारत की हरित क्रांति के जनक के रूप में जाना जाता है। 'हरित क्रांति' शब्द को 1968 में विलियम एस. गॉड ने गढ़ा था।
 - ▲ एम.एस. स्वामीनाथन ने भारतीय मृदा के अनुकूल उर्वरकों, विभिन्न उच्च उपज वाली गेहूं की किस्मों और कुशल कृषि तकनीकों पर शोध किया।
 - ▲ उन्होंने हरित क्रांति की शुरुआत की, और पहले ही वर्ष में गेहूं की पैदावार तीन गुना कर दी।
- **अंतर्राष्ट्रीय मान्यता:** 1982 में वे फिलीपींस स्थित अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान के महानिदेशक बने – इस पद पर पहुंचने वाले प्रथम एशियाई।
 - ▲ उन्हें 1987 में प्रथम वर्ल्ड फूड प्राइज मिला।
 - ▲ उन्हें 1971 में रेमन मैग्सेसे पुरस्कार, 1986 में अल्बर्ट आइंस्टीन वर्ल्ड साइंस अवार्ड, 1999 में यूनेस्को गांधी गोल्ड मेडल, 2000 में फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट फोर फ्रीडम्स अवार्ड सहित कई सम्मान प्राप्त हुए।
- **भारत में पुरस्कार:** लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय पुरस्कार, इंदिरा गांधी पुरस्कार सहित सभी तीन नागरिक सम्मान – पद्मश्री (1967), पद्मभूषण (1972), पद्मविभूषण (1989), एवं भारत रत्न (2024)।

हरित क्रांति

- यह आधुनिक तकनीक, उच्च उपज वाली बीज किस्में (HYV), रासायनिक उर्वरकों, सिंचाई और यंत्रीकरण के उपयोग से कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि की अवधि को दर्शाता है।
- भारत में इसकी शुरुआत 1960 के दशक के मध्य में हुई और इसने देश को खाद्यान्न की कमी से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किया, विशेष रूप से गेहूं और चावल उत्पादन में।

मुख्य विशेषताएं:

- ▲ **उच्च उपज वाली बीज किस्में (HYV):** मुख्यतः गेहूं और चावल, जो मैक्सिको और फिलीपींस से लाई गईं।
- ▲ **रासायनिक इनपुट का उपयोग:** फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए उर्वरकों, कीटनाशकों और कीटनाशकों का अधिक उपयोग।
- ▲ **सिंचाई का विस्तार:** नहर सिंचाई, ट्यूबवेल और बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं पर बला।
- ▲ **यंत्रीकरण:** ट्रैक्टर, हार्वेस्टर और थ्रेशर की शुरुआत से श्रम पर निर्भरता कम हुई।
- ▲ **प्रमुख योगदानकर्ता:** एम.एस. स्वामीनाथन और नॉर्मन बोरलॉग ने वैश्विक स्तर पर HYV बीजों की शुरुआत की।
- ▲ **भौगोलिक विस्तार:** मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश को लाभ मिला।

क्या आप जानते हैं?

Revolution	Sectors
White Revolution	Operation Flood, launched in 1970, ushered in the White Revolution and transformed the dairy sector in India.
Yellow Revolution	Launched in the early 1990s to achieve self-sufficiency in Oilseed production
Blue Revolution	Launched in 2015-26, it aims to transform the Fisheries sector
Black Revolution	Self-sufficiency in the crude/petroleum sector
Golden Revolution	Increase in the production of honey and horticulture
Silver Revolution	Launched in the 1970s and 1980s to increase egg production and the growth of the poultry sector

उपलब्धियां

- **भारत आत्मनिर्भर बना:** कृषि क्षेत्र में लगभग 45% श्रमिक कार्यरत हैं।
 - ▲ भारत न केवल आत्मनिर्भर बना बल्कि विश्व के प्रमुख कृषि निर्यातकों में भी शामिल हुआ।
- खाद्यान्न आयात पर निर्भरता कम हुई।
- अकाल की रोकथाम और खाद्य सुरक्षा में सुधार हुआ।

चुनौतियाँ

- **क्षेत्रीय असमानता:** लाभ सिंचित क्षेत्रों तक सीमित रहे; पूर्वी और दक्षिणी राज्य पीछे रह गए।

- **पर्यावरणीय क्षति:** मृदा की गुणवत्ता में गिरावट, भूजल का अत्यधिक दोहन, रासायनिक प्रदूषण।
- **जैव विविधता में गिरावट:** कुछ HYV फसलों पर ध्यान केंद्रित करने से मोटे अनाज, दालों और पारंपरिक किस्मों की उपेक्षा हुई।
- **छोटे किसानों की उपेक्षा:** उच्च लागत के कारण छोटे और सीमांत किसानों के लिए भागीदारी कठिन हुई।
- **भूजल का अत्यधिक दोहन:** राज्य सरकारों की मुफ्त विद्युत नीति ने अस्थायी भूजल दोहन को बढ़ावा दिया।
 - ▲ CGWB (केंद्रीय भूजल बोर्ड) के अनुसार, पंजाब की लगभग 80% जल इकाइयाँ 'अत्यधिक दोहन' की श्रेणी में हैं।

आगे की राह

- सतत कृषि और जलवायु-लचीली फसलों पर ध्यान केंद्रित करना।
- जैविक खेती, सूक्ष्म सिंचाई और सटीक कृषि को बढ़ावा देना।
- नीतियों को केवल उत्पादकता ही नहीं, बल्कि छोटे किसानों की आय वृद्धि को भी प्राथमिकता देनी चाहिए।
- वर्तमान समय की आवश्यकता है – एक समग्र दृष्टिकोण जो तकनीकी नवाचार, संस्थागत समर्थन और संसाधनों के समान वितरण को मिलाकर भारतीय कृषि को एक लचीला एवं समावेशी विकास इंजन में परिवर्तित कर सके।

Source: TH

भारत-रूस: औद्योगिक सहयोग और दुर्लभ मृदा खनिजों का निष्कर्षण

संदर्भ

- भारत और रूस ने अपने रणनीतिक साझेदारी को पुनः पुष्टि की है, जिसमें औद्योगिक सहयोग पर विशेष ध्यान दिया गया है — विशेष रूप से दुर्लभ पृथ्वी खनिजों और महत्वपूर्ण संसाधनों के निष्कर्षण में — ऐसे समय में जब अमेरिका ने भारत के रूस के साथ तेल व्यापार पर दबाव बढ़ा दिया है।

अमेरिका की टैरिफ और व्यापार नीति

- यूरोपीय संघ (ईयू) ने 2024 में 39.1 बिलियन डॉलर मूल्य की रूसी वस्तुओं का आयात किया, जिसमें 25.2 बिलियन डॉलर का तेल शामिल है, जबकि अमेरिका ने स्वयं रूस से 3.3 बिलियन डॉलर मूल्य की सामरिक सामग्री खरीदी।
- भारत ने रूसी तेल का आयात किया - 2024 में 52.7 बिलियन डॉलर - जो अमेरिका के दबाव के बावजूद चीन के 62.6 बिलियन डॉलर के बाद दूसरे स्थान पर है।
- अमेरिका ने चीन को लक्षित करने से बचाव किया है क्योंकि चीन के पास गैलियम, जर्मेनियम, दुर्लभ पृथ्वी तत्वों और ग्रेफाइट जैसे महत्वपूर्ण संसाधनों पर नियंत्रण है, जो रक्षा एवं तकनीक के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

भारत पर अमेरिकी टैरिफ का प्रभाव

- अमेरिका को निर्यात में 40–50% की गिरावट आ सकती है, विशेष रूप से उन श्रेणियों में जो छूट के दायरे में नहीं हैं।
- वियतनाम और बांग्लादेश जैसे प्रतिस्पर्धी देशों को कम टैरिफ का लाभ मिलता है, जिससे भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धा क्षमता घटती है।

दुर्लभ पृथ्वी खनिजों में भारत-रूस सहयोग

- **आवश्यकता:** दुर्लभ पृथ्वी तत्व (REEs) आधुनिक तकनीकों — जैसे इलेक्ट्रिक वाहन, पवन टरबाइन, सेमीकंडक्टर और रक्षा प्रणालियों — के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।
 - ▲ चीन, जो वैश्विक आपूर्ति का 85–95% नियंत्रित करता है, द्वारा हाल ही में लगाए गए निर्यात प्रतिबंधों ने भारत के ऑटोमोबाइल उत्पादन को प्रभावित किया और इसकी आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियों को उजागर किया।
- **भारत और रूस द्वारा उठाए गए कदम:**
 - ▲ दुर्लभ पृथ्वी और महत्वपूर्ण खनिजों के निष्कर्षण में संयुक्त उपक्रमों की खोज।

- भूमिगत कोयला गैसीकरण और आधुनिक औद्योगिक अवसंरचना पर ध्यान।
- खनन उपकरण एवं अन्वेषण में तकनीकी हस्तांतरण और क्षमता निर्माण को बढ़ावा।

औद्योगिक सहयोग का विस्तार

- भारत-रूस कार्य समूह की 11वीं बैठक — आधुनिकीकरण और औद्योगिक सहयोग पर — नई दिल्ली में आयोजित हुई, जिसमें कई क्षेत्रों को शामिल किया गया:
 - एयरोस्पेस विज्ञान और तकनीक:** आधुनिक विंड टनल, छोटे विमान के पिस्टन इंजन, और कार्बन फाइबर, एडिटिव मैनुफैक्चरिंग, तथा 3D प्रिंटिंग में संयुक्त अनुसंधान एवं विकास की योजना।
 - एल्यूमीनियम, उर्वरक और रेलवे परिवहन:** सहयोग और तकनीकी साझेदारी को बढ़ावा।
 - कचरा प्रबंधन:** औद्योगिक और घरेलू अपशिष्ट के समाधान पर चर्चा।
- बैठक का समापन एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर के साथ हुआ, जिसमें रणनीतिक साझेदारी और आर्थिक संबंधों को गहरा करने की साझा प्रतिबद्धता को दोहराया गया।

वैज्ञानिक सहयोग

- भारत के CSIR-IMMT ने रूस के गिरेडमेट और रोसाटॉम के साथ संयुक्त घोषणापत्रों पर हस्ताक्षर किए:
 - महत्वपूर्ण खनिज प्रसंस्करण तकनीकों को आगे बढ़ाने के लिए।
 - सतत संसाधन विकास को बढ़ावा देने के लिए।
 - आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत पहल के अंतर्गत भारत के लक्ष्यों को समर्थन देने के लिए।

Source: IE

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा किसानों, पशुपालकों और मछुआरों के हितों पर बल

संदर्भ

- अमेरिकी टैरिफ के बीच, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि सरकार भारत के किसानों, पशुपालकों और मछुआरों के हितों से कभी समझौता नहीं करेगी।

पृष्ठभूमि

- भारत और अमेरिका के बीच व्यापार वार्ता रुकी हुई है। अमेरिका (डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन के अंतर्गत) भारत पर दबाव बना रहा है कि वह:
 - अमेरिकी कृषि उत्पादों के लिए घरेलू बाजार खोले।
 - कुछ आयातों पर लगे प्रतिबंधों को शिथिल करे।
- भारत की हिचकिचाहट घरेलू आजीविका से जुड़ी चिंताओं के कारण है।

प्रमुख चिंताएँ

- कृषि क्षेत्र:** अमेरिका भारत पर आनुवंशिक रूप से संशोधित (GM) सोयाबीन और मक्का के आयात की अनुमति देने का दबाव बना रहा है।
 - ये दोनों फसलें भारत में बड़े पैमाने पर उगाई जाती हैं — लगभग 13 मिलियन और 12 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में।
 - भारत को आशंका है कि इससे घरेलू कीमतों में गिरावट और अनुचित प्रतिस्पर्धा हो सकती है, क्योंकि भारत में GM खाद्य फसलों की खेती प्रतिबंधित है।
 - यह भारत की बीज संप्रभुता और जैव सुरक्षा मानकों को भी कमजोर कर सकता है।
- एथनॉल आयात:** अमेरिका चाहता है कि भारत जैव-ईंधन के रूप में उपयोग के लिए एथनॉल आयात की अनुमति दे।
 - वर्तमान में केवल घरेलू रूप से उत्पादित गन्ना, मक्का और चावल से बना एथनॉल ही पेट्रोल में 20% तक मिश्रण के लिए उपयोग किया जाता है।
 - अमेरिका से आयातित एथनॉल की अनुमति से घरेलू एथनॉल की मांग घट सकती है और अंततः भारत के गन्ना किसानों को हानि होगी।
- डेयरी क्षेत्र:** भारतीय डेयरी उद्योग अमेरिका, यूरोपीय संघ, न्यूजीलैंड या ऑस्ट्रेलिया के साथ किसी भी मुक्त व्यापार समझौते के अंतर्गत दूध पाउडर, मक्खन तेल और चीज़ के आयात का विरोध करता है।
 - भारत चीज़ पर 30%, मक्खन पर 40%, और दूध पाउडर पर 60% आयात शुल्क लगाता है।

- ▲ साथ ही यह अनिवार्य है कि सभी आयातित डेयरी उत्पाद उन जानवरों से प्राप्त हों जिन्हें किसी भी प्रकार के आंतरिक अंगों, हड्डी के चूर्ण या पशु ऊतकों से बने आहार नहीं दिए गए हों।
- ▲ अमेरिका का दावा है कि यह प्रतिबंध केवल धार्मिक और सांस्कृतिक आधारों पर आधारित है।
- **मत्स्य क्षेत्र:** भारत का समुद्री खाद्य निर्यात अमेरिका को 2024 में \$2.48 बिलियन रहा — अमेरिका एक प्रमुख बाजार है।
 - ▲ अमेरिका द्वारा लगाया गया 50% टैरिफ आंध्र प्रदेश, गुजरात, ओडिशा और तमिलनाडु जैसे राज्यों के जलीय कृषि किसानों को हानि पहुंचा सकता है।
 - ▲ यह तब और गंभीर है जब चिली, इक्वाडोर, इंडोनेशिया और वियतनाम जैसे प्रतिस्पर्धी देशों पर केवल 10–20% टैरिफ लगाया गया है।

भारत का दृष्टिकोण

- **आजीविका की सुरक्षा:** सस्ते आयात और मूल्य अस्थिरता से किसानों, मछुआरों एवं डेयरी उत्पादकों के हितों की रक्षा।
- **खाद्य एवं जैव सुरक्षा मानक:** GM खाद्य फसलों की खेती और आयात पर प्रतिबंध बनाए रखना, घरेलू नियमों एवं उपभोक्ता सुरक्षा के अनुरूप।
- **सांस्कृतिक और धार्मिक विचार:** उन जानवरों से प्राप्त डेयरी उत्पादों के आयात पर प्रतिबंध बनाए रखना जिन्हें पशु-आधारित आहार दिया गया हो।
- **महत्वपूर्ण वस्तुओं में आत्मनिर्भरता:** ग्रामीण अर्थव्यवस्था को समर्थन देने और आयात पर निर्भरता से बचने के लिए घरेलू एथनॉल उत्पादन को बढ़ावा देना।
- **व्यापार संतुलन की चिंता:** उन संवेदनशील क्षेत्रों में टैरिफ रियायतों का विरोध करना जहां भारत आयात वृद्धि के प्रति संवेदनशील है।

आगे की राह

- **संतुलित व्यापार वार्ताएं:** बाजारों को सावधानीपूर्वक खोलना, यह सुनिश्चित करते हुए कि कृषि और डेयरी जैसे संवेदनशील क्षेत्रों की रक्षा हो, जबकि कम संवेदनशील क्षेत्रों में रियायतों की संभावना की खोज की जाए।

- **निर्यात बाजारों का विविधीकरण:** भारत अमेरिका पर समुद्री खाद्य और अन्य निर्यातों के लिए अत्यधिक निर्भरता को कम कर सकता है, तथा पूर्वी एशिया, मध्य पूर्व एवं अफ्रीका जैसे नए बाजारों की खोज कर सकता है।
- **आजीविका की सुरक्षा:** जब तक घरेलू उत्पादक प्रतिस्पर्धी नहीं बन जाते, तब तक डेयरी तथा अन्य संवेदनशील क्षेत्रों के लिए उच्च आयात शुल्क और गैर-टैरिफ बाधाएं बनाए रखना।

निष्कर्ष

- भारत-अमेरिका व्यापार वार्ताएं कृषि, डेयरी, एथनॉल और मत्स्य जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में गहरे मतभेदों के कारण रुक गई हैं।
- जहां भारत आजीविका, सांस्कृतिक मानदंडों और खाद्य सुरक्षा की रक्षा करना चाहता है, वहीं अमेरिका अधिक बाजार पहुंच की मांग कर रहा है।
- एक संतुलित दृष्टिकोण, जो घरेलू हितों की रक्षा करते हुए पारस्परिक रूप से लाभकारी व्यापार अवसरों का विस्तार करे, इस गतिरोध को समाप्त करने के लिए आवश्यक है।

Source: IE

11वां राष्ट्रीय हथकरघा दिवस

संदर्भ

- 11वां राष्ट्रीय हथकरघा दिवस नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में मनाया गया।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस

- हथकरघा क्षेत्र ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 7 अगस्त 1905 को शुरू किया गया स्वदेशी आंदोलन स्वदेशी उद्योगों, विशेष रूप से हथकरघा को, औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध आर्थिक प्रतिरोध के रूप में बढ़ावा देता था।
 - ▲ इस विरासत के सम्मान में, अगस्त 7 को 2015 में राष्ट्रीय हथकरघा दिवस घोषित किया गया।
- यह प्रतिवर्ष मनाया जाता है और यह बुनकरों के योगदान को मान्यता देता है तथा भारत की हथकरघा विरासत के संरक्षण को बढ़ावा देता है।

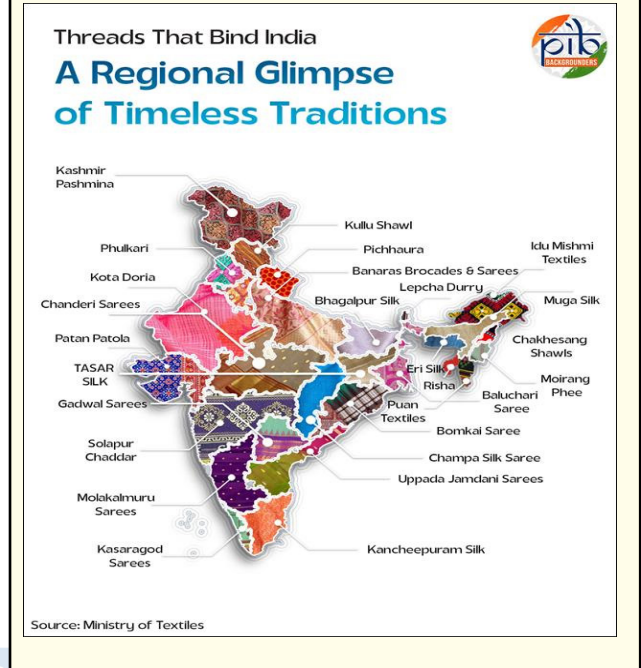
भारतीय हथकरघा उद्योग

- भारत का हथकरघा क्षेत्र कपड़ों की विस्तृत श्रृंखला के लिए जाना जाता है, जिसमें कॉटन, खादी, जूट, लिनन और हिमालयी बिच्छू बूटी जैसे दुर्लभ रेशे शामिल हैं।
 - यह टसर, मशरू, मुलबरी, एरी, मूगा और अहिंसा जैसे विशिष्ट रेशमी प्रकारों के साथ-साथ पश्मीना, शहतूश और कश्मीरी ऊनी बुनाई भी तैयार करता है।
- यह विश्व के सबसे प्राचीन कुटीर उद्योगों में से एक है, जो देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और कुशल शिल्पकला को प्रदर्शित करता है।
 - विश्व के 95% हस्तनिर्मित कपड़े भारत में निर्मित होते हैं।
- यह गांवों और छोटे शहरों में फैला हुआ है तथा पारंपरिक हस्त कताई, बुनाई एवं छपाई तकनीकों पर आधारित है, जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं।
- आज, हथकरघा बुनाई भारत का सबसे बड़ा कुटीर उद्योग है। 4वें अखिल भारतीय हथकरघा जनगणना (2019–20) के अनुसार लगभग 35.22 लाख परिवार इस कार्य में संलग्न हैं।
 - लगभग 72% आर्थिक रूप से सक्रिय हथकरघा बुनकर महिलाएं हैं।
- वित्तीय वर्ष 2024–25 में, संयुक्त राज्य अमेरिका ₹331.56 करोड़ मूल्य के निर्यात के साथ सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य बना रहा।

क्या आप जानते हैं?

- भारत के प्रत्येक क्षेत्र ने अपनी विशिष्ट हथकरघा शैली विकसित की है।
 - उदाहरण के लिए, राजस्थान अपनी बांधनी (टाई एंड डाई) के लिए प्रसिद्ध है, मध्य प्रदेश चंदेरी के लिए, और उत्तर प्रदेश जैकवार्ड पैटर्न के लिए।
 - अन्य प्रसिद्ध शैलियों में ओडिशा की बौमकाई, गोवा की कुंबी, महाराष्ट्र की पैठणी, ओडिशा की कोटपद, केरल की बलरामपुरम, और पश्चिम बंगाल की जामदानी व बलुचरी शामिल हैं।

- प्रत्येक वस्त्र पारंपरिक तरीकों से हाथ से बनाया जाता है, जिससे प्रत्येक उत्पाद अद्वितीय होता है।



Source : PIB

भारत की चिकित्सा पर्यटन/मेडिकल टूरिज्म अर्थव्यवस्था

समाचारों में

- मेडिकल टूरिज्म, अर्थात् किफायती और उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाओं के लिए सीमाओं के पार यात्रा करने की प्रथा, वर्तमान में एक वैश्विक उद्योग बन चुकी है, जिसमें भारत एक प्रमुख गंतव्य के रूप में उभर कर सामने आया है।
 - 2025 तक भारत वैश्विक मेडिकल टूरिज्म इंडेक्स में 10वें स्थान पर है और यह उद्योग 2026 तक US\$54 बिलियन से अधिक तक पहुंचने की संभावना है।

मेडिकल टूरिज्म क्या है?

- मेडिकल टूरिज्म का तात्पर्य है कि मरीज चिकित्सा उपचार प्राप्त करने के लिए—जैसे जटिल सर्जरी, उन्नत डायग्नोस्टिक्स, कॉस्मेटिक, डेंटल या वेलनेस थेरेपी—प्रायः राष्ट्रीय सीमाओं के पार यात्रा करते हैं।

भारत में मेडिकल टूरिस्ट आकर्षित करने के कारण

- **लागत में लाभ:** पश्चिमी देशों की तुलना में उपचार की लागत 60–90% तक कम होती है, जिससे अंतरराष्ट्रीय मरीजों के लिए गुणवत्तापूर्ण देखभाल सुलभ होती है।
- **कुशल पेशेवर:** भारत में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त डॉक्टर और मेडिकल स्टाफ की बड़ी संख्या है, जिनमें से कई विदेशों में प्रशिक्षित हैं और अंग्रेजी में दक्ष हैं।
- **विश्वस्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर:** प्रमुख महानगरों में अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिनमें से कई को संयुक्त आयोग अंतरराष्ट्रीय (JCI) जैसी अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त है।
- **विविध उपचार विकल्प:** आधुनिक चिकित्सा के साथ-साथ आयुर्वेद, योग और वेलनेस पुनर्वास जैसी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ भी उपलब्ध हैं।
- **संचार में आसानी:** स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच अंग्रेजी व्यापक रूप से बोली जाती है, जिससे मरीजों का अनुभव बेहतर होता है।

सरकार और उद्योग की पहल

- **नीतिगत समर्थन:** 2002 की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति ने विदेशी मरीजों के उपचार को “डीमंड एक्सपोर्ट” माना, जिससे इस क्षेत्र को बढ़ावा मिला।
- **‘हील इन इंडिया’ अभियान:** चिकित्सा मूल्य यात्रा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न मंत्रालयों को एकीकृत कर भारत को एक समग्र गंतव्य के रूप में प्रचारित किया गया।
- **बीजा उदारीकरण:** 171 देशों के लिए ई-मेडिकल बीजा की शुरुआत।
- **इंफ्रास्ट्रक्चर निवेश:** टियर-2 और टियर-3 शहरों में विस्तार और लक्षित वित्तीय प्रोत्साहन।
- **अंतरराष्ट्रीय समझौते:** जैसे बांग्लादेश के साथ द्विपक्षीय समझौते, जिससे चिकित्सा यात्रा आसान हो सके।

भारत के लिए महत्व

- **विदेशी मुद्रा और आर्थिक विकास:** इस क्षेत्र ने लगभग 16.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर अर्जित किये, जिससे भुगतान संतुलन सकारात्मक बना रहा।

- **स्वास्थ्य क्षेत्र को बढ़ावा:** महानगरों और द्वितीयक शहरों में गुणवत्ता, इंफ्रास्ट्रक्चर और तकनीक में सुधार होता है।
- **रोजगार सृजन:** स्वास्थ्य सेवा, पर्यटन, हॉस्पिटैलिटी और वेलनेस क्षेत्रों में कुशल और अर्ध-कुशल श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।
- **वैश्विक सॉफ्ट पावर:** भारत की प्रतिष्ठा एक स्वास्थ्य एवं वेलनेस लीडर के रूप में बढ़ती है, जिससे कूटनीतिक और सांस्कृतिक प्रभाव मजबूत होता है।

चुनौतियाँ और नैतिक मुद्दे

- **स्वास्थ्य असमानता:** विदेशी मरीजों को सेवा देने पर ध्यान केंद्रित करने से सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों में संसाधनों की कमी हो सकती है।
- **नियामक खामियाँ:** अपर्याप्त निगरानी के कारण भ्रामक विज्ञापन, सूचित सहमति की कमी और डेटा सुरक्षा की कमजोरियाँ सामने आती हैं, विशेष रूप से विदेशी मरीजों के लिए।
- **सार्वजनिक से निजी क्षेत्र की ओर झुकाव:** कुशल पेशेवर अधिक लाभकारी निजी अस्पतालों की ओर आकर्षित हो सकते हैं, जिससे घरेलू स्तर पर कमी हो सकती है।
- **नैतिक चिंताएँ:** कभी-कभी डॉक्टर विदेशी मरीजों के लिए लाभकारी प्रक्रियाओं को प्राथमिकता देते हैं, जिससे स्थानीय समुदाय की प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं की उपेक्षा होती है।

आगे की राह

- **नीति और नियामक सुधार**
 - ▲ **व्यापक नियामक ढांचा:** मरीज की सुरक्षा, पारदर्शिता, सूचित सहमति और गुणवत्ता आश्वासन को सुदृढ़ करना; सख्त डेटा सुरक्षा कानून।
 - ▲ **संसाधनों का न्यायसंगत आवंटन:** मेडिकल टूरिज्म से प्राप्त राजस्व को सार्वजनिक स्वास्थ्य, इंफ्रास्ट्रक्चर और कार्यबल विकास में पुनर्निवेश करने की नीति।

- **समावेशिता और सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा**
 - ▲ **रणनीतिक साझेदारियाँ:** SAARC, दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य पूर्व, अफ्रीका, यूरोप, उत्तरी अमेरिका जैसे क्षेत्रों के साथ द्विपक्षीय समझौते और आउटरीच।
 - ▲ **बीमा और मरीज सुरक्षा:** अधिक उपचारों के लिए बीमा कवरेज का विस्तार और विदेशी मरीजों के लिए क्लेम प्रक्रिया को सरल बनाना।
 - ▲ **डिजिटल परिवर्तन:** ऑनलाइन MVT पोर्टल और टेलीमेडिसिन का विस्तार, जिसमें AYUSH और वेलनेस मॉड्यूल शामिल हों।
- **सतत विकास**
 - ▲ **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP):** FDI और नवाचार को बढ़ावा देना, अंतरराष्ट्रीय मॉडल से सीख लेकर अस्पताल-पर्यटन का एकीकृत विकास।
 - ▲ **क्षेत्रीय विकास:** टियर-2 और टियर-3 शहरों में विश्वस्तरीय देखभाल लाना, जिससे महानगरों पर दबाव कम हो और विकास के लाभों का प्रसार हो।
- हालिया आंकड़ों के अनुसार, भारत के लगभग 60% जिलों में गंभीर भूजल हास या प्रदूषण या दोनों की समस्या है, जिससे करोड़ों लोगों की आजीविका खतरे में है।
- इसके अतिरिक्त, भूजल एक छिपे हुए प्रदूषण संकट का सामना कर रहा है।
 - ▲ प्रदूषक रासायनिक उर्वरकों, औद्योगिक अपशिष्ट, सीवेज रिसाव एवं प्राकृतिक स्रोतों से उत्पन्न होते हैं, जिन्हें मानवीय गतिविधियाँ और भी अधिक खराब करती हैं।

प्रमुख संरचनात्मक समस्याएँ

- **संस्थागत विखंडन:** भारत का भूजल संकट एक खंडित नियामक प्रणाली और कमजोर समन्वय से उत्पन्न होता है।
 - ▲ CGWB, CPCB, SPCBs और जल शक्ति मंत्रालय जैसी एजेंसियाँ अलग-अलग काम करती हैं, जिससे प्रयासों की पुनरावृत्ति होती है तथा विज्ञान-आधारित समन्वित हस्तक्षेप की कमी रहती है।
- **कानूनी प्रवर्तन की कमजोरी:** जल अधिनियम मौजूद है, लेकिन विशेष रूप से भूजल निर्वहन पर इसका प्रवर्तन अपर्याप्त है।

Source: TH

भारत में भूजल प्रदूषण

समाचारों में

- भारत पीने योग्य जल और सिंचाई के लिए भूजल पर अत्यधिक निर्भर है, लेकिन तीव्र और अनियंत्रित दोहन के कारण व्यापक प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो गई है।

भारत का भूजल संकट

- भारत अपनी ग्रामीण पेयजल आवश्यकताओं का लगभग 85% और सिंचाई जल का लगभग 60% भूजल से प्राप्त करता है।
- विगत दशकों में वर्षा में वृद्धि के बावजूद, अत्यधिक दोहन और प्राकृतिक पुनर्भरण क्षेत्रों पर अतिक्रमण के कारण भूजल पुनर्भरण अपर्याप्त है।
- देश के विभिन्न भागों में भूजल स्तर गंभीर रूप से गिर गया है, विशेष रूप से उत्तर-पश्चिमी राज्यों (पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश) में जल स्तर 40 मीटर से अधिक नीचे चला गया है, जिससे जल निकासी महंगी और अस्थिर हो गई है।

- ▲ नियामक खामियाँ और ढीली अनुपालन प्रणाली प्रदूषकों को प्रोत्साहित करती हैं।
- **रीयल-टाइम डेटा की कमी:** निगरानी अनियमित और सार्वजनिक रूप से सुलभ नहीं है।
 - ▲ प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली या सार्वजनिक स्वास्थ्य निगरानी से जुड़ाव के अभाव में प्रदूषण का पता गंभीर स्वास्थ्य परिणामों के बाद ही चलता है।
- **अत्यधिक दोहन:** अत्यधिक पंपिंग से जल स्तर गिरता है और प्रदूषकों की सांद्रता बढ़ती है, जिससे एक्विफर्स भू-जनित विषाक्त पदार्थों एवं लवणता के अतिक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।

प्रभाव

- 2024 की केंद्रीय भूजल बोर्ड रिपोर्ट में कई राज्यों में नाइट्रेट, फ्लोराइड, आर्सेनिक, यूरेनियम, आयरन और भारी धातुओं से प्रदूषण की बात कही गई है, जिससे

फ्लोरोसिस, कैंसर, किडनी फेलियर एवं विकास संबंधी विकार जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

- उत्तर प्रदेश और ओडिशा जैसे राज्यों में भूजल विषाक्तता की घटनाएँ संस्थागत उपेक्षा को उजागर करती हैं।
- यह बढ़ता हुआ भूजल संकट एक बड़ा सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरा बन गया है, जो विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में करोड़ों लोगों को प्रभावित करता है।

भूजल मूल्यांकन और प्रबंधन पहल

- **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (MGNREGS):** जल संरक्षण और जल संचयन संरचनाओं को शामिल करती है, जिससे ग्रामीण जल सुरक्षा बढ़ती है।
- **15वां वित्त आयोग अनुदान:** वर्षा जल संचयन और अन्य जल संरक्षण गतिविधियों के लिए राज्यों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
- **जल शक्ति अभियान (JSA):** 2019 में शुरू हुआ, अब अपने 5वें चरण ("कैच द रेन" 2024) में है, जो ग्रामीण और शहरी जिलों में विभिन्न योजनाओं के समन्वय से वर्षा जल संचयन एवं जल संरक्षण पर केंद्रित है।
- **AMRUT 2.0:** तूफानी जल निकासी के माध्यम से वर्षा जल संचयन को समर्थन देता है और 'जलभृत प्रबंधन योजनाएँ' के माध्यम से भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देता है।
- **अटल भूजल योजना (2020):** 7 राज्यों के 80 जिलों के जल-संकटग्रस्त ग्राम पंचायतों को लक्षित करती है, भूजल प्रबंधन पर केंद्रित है।
- **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY):** सिंचाई कवरेज बढ़ाने और जल उपयोग दक्षता सुधारने के लिए 'हर खेत को जल', जल निकायों की मरम्मत एवं लघु सतही सिंचाई योजनाओं जैसे घटकों के माध्यम से कार्य करती है।
- **जल शक्ति मंत्रालय द्वारा BWUE की स्थापना:** राष्ट्रीय जल मिशन के अंतर्गत जल उपयोग दक्षता को विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ावा देने के लिए एक सुविधा प्रदाता के रूप में कार्य करता है।

- **मिशन अमृत सरोवर (2022):** प्रत्येक जिले में 75 अमृत सरोवरों का निर्माण या पुनरुद्धार करने का लक्ष्य रखता है, जल संचयन और संरक्षण के लिए।
- **राष्ट्रीय एक्विफर मैपिंग (NAQUIM):** केंद्रीय भूजल बोर्ड द्वारा 25 लाख वर्ग किमी से अधिक क्षेत्र में पूरी की गई है, जो भूजल पुनर्भरण और संरक्षण योजनाओं को समर्थन देती है।
- **राष्ट्रीय जल नीति (2012):** जल संसाधन विभाग द्वारा तैयार की गई है, जो वर्षा जल संचयन और जल संरक्षण का समर्थन करती है तथा वर्षा जल के प्रत्यक्ष उपयोग के माध्यम से जल उपलब्धता बढ़ाने की आवश्यकता को उजागर करती है।
- **राष्ट्रीय जल पुरस्कार (2018):** भारत भर में जल संरक्षण और प्रबंधन के प्रति असाधारण योगदान को मान्यता देने और प्रोत्साहित करने के लिए जल संसाधन विभाग द्वारा 2018 में शुरू किया गया।

सुझाव

- भारत का भूजल संकट अब केवल "कमी" नहीं बल्कि "सुरक्षा" का संकट बन गया है, जिसमें अदृश्य और अपरिवर्तनीय प्रदूषण एक गंभीर खतरा उत्पन्न कर रहा है।
- इसलिए भारत के भूजल संकट के समाधान के लिए एक साहसिक, समन्वित और बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है:
 - ▲ **व्यापक नीति सुधार:** अति-उपयोग वाले क्षेत्रों में सख्त निकासी सीमा तय करें और जल-कुशल कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित करें।
 - ▲ **एकीकृत निगरानी प्रणाली:** रीयल-टाइम डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करके प्रदूषण प्रवृत्तियों को ट्रैक करें और भविष्य के जोखिमों की भविष्यवाणी करें।
 - ▲ **जन जागरूकता अभियान:** समुदायों को प्रदूषण के जोखिमों के बारे में शिक्षित करें और कम लागत वाली उपचार तकनीकों को अपनाने को बढ़ावा दें।
 - ▲ **लक्षित उपचार उपाय:** लवणता-प्रवण क्षेत्रों में वर्षा जल संचयन और फ्लोराइड व नाइट्रेट प्रदूषण

को रोकने के लिए फॉस्फेट न्यूनीकरण रणनीतियाँ जैसे क्षेत्र-विशिष्ट समाधान लागू करें।

Source : TH

संक्षिप्त समाचार

नाउरू

संदर्भ

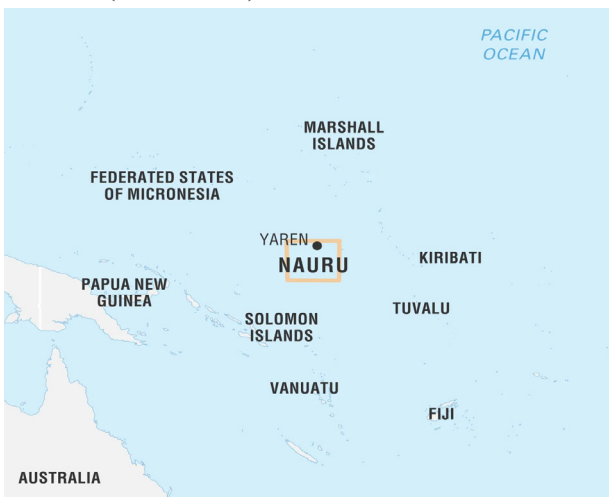
- प्रशांत महासागर के सूक्ष्म राष्ट्र नाउरू ने जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए एक अद्वितीय योजना बनाई है—'गोल्डन पासपोर्ट' बेचकर धन एकत्रित करने की।

परिचय

- प्रत्येक पासपोर्ट की कीमत US\$105,000 रखी गई है।
- नाउरू का लक्ष्य है कि "क्लाइमेट रेजिलिएंस सिटिजनशिप" कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में US\$5 मिलियन से अधिक एकत्रित किया जाए।
- नाउरू को संभावना है कि यह पासपोर्ट कार्यक्रम अंततः \$43 मिलियन तक राजस्व उत्पन्न कर सकता है, जो सरकार की कुल आय का लगभग 20% होगा।

नाउरू के बारे में

- नाउरू एक द्वीप गणराज्य है जो दक्षिण प्रशांत के विरल जनसंख्या वाले क्षेत्र में फॉस्फेट चट्टानों के एक छोटे से पठार पर स्थित है।
- यह क्षेत्रफल के आधार पर तीसरा का तीसरा सबसे छोटा देश है (21 वर्ग किमी), वेटिकन सिटी और मोनाको के बाद।



अतीत की समृद्धि और वर्तमान संकट

- अत्यंत शुद्ध फॉस्फेट भंडार—जो उर्वरक का एक प्रमुख घटक है—ने कभी नाउरू को प्रति व्यक्ति आय के मामले में विश्व के सबसे अमीर स्थानों में सम्मिलित कर दिया था।
- लेकिन ये भंडार अब समाप्त हो चुके हैं, और शोधकर्ताओं का अनुमान है कि नाउरू का लगभग 80% हिस्सा खनन के कारण अब रहने योग्य नहीं रहा।
- जो थोड़ी-सी भूमि नाउरू के पास बची है, वह भी समुद्र के बढ़ते जलस्तर से खतरे में है, जो वैश्विक औसत से 1.5 गुना तेजी से बढ़ रहा है।
- नाउरू को अंततः अपनी 90% जनसंख्या को स्थानांतरित करना पड़ेगा, और इस सामूहिक पुनर्वास के पहले चरण की अनुमानित लागत \$60 मिलियन से अधिक है।

Source: TH

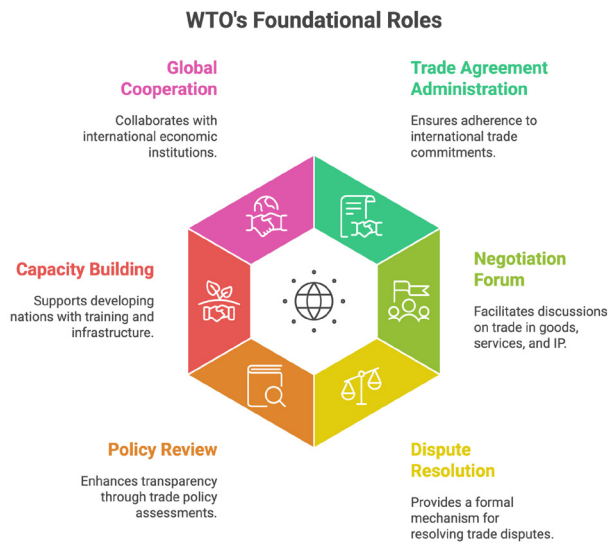
विश्व व्यापार संगठन (WTO)

समाचार

- ब्राजील ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा ब्राजील के आयात पर 50% टैरिफ लगाने के निर्णय पर विश्व व्यापार संगठन (WTO) में औपचारिक परामर्श शुरू कर दिया है, जिससे दोनों देशों के बीच राजनयिक तनाव बढ़ गया है।

विश्व व्यापार संगठन (WTO) के बारे में

- विश्व व्यापार संगठन (WTO) एकमात्र वैश्विक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जो देशों के बीच व्यापार को विनियमित और सुगम बनाने के लिए उत्तरदायी है।
- इसकी स्थापना 1 जनवरी, 1995 को टैरिफ और व्यापार पर सामान्य समझौते (GATT) के उत्तराधिकारी के रूप में हुई थी, जो 1948 से वैश्विक व्यापार को नियंत्रित करता रहा है।
- WTO के वर्तमान में 166 सदस्य देश हैं, जो वैश्विक व्यापार और सकल घरेलू उत्पाद के 98% से अधिक का प्रतिनिधित्व करते हैं, तथा इसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में है।



Source: TOI

भारत पूर्वानुमान प्रणाली (BharatFS)

संदर्भ

- भारत ने भारत पूर्वानुमान प्रणाली (BharatFS) विकसित की है, जो एक उन्नत मौसम पूर्वानुमान मॉडल है जो पहले के मॉडलों की तुलना में अत्यधिक वर्षा पूर्वानुमान की सटीकता में 30% सुधार करता है।

BharatFS के बारे में

- BharatFS (भारत पूर्वानुमान प्रणाली) भारत का सबसे उन्नत वास्तविक समय वैश्विक मौसम पूर्वानुमान मॉडल है, जिसे IITM-पुणे ने NCMRWF-नोएडा और भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से विकसित किया है।
- यह “मेक इन इंडिया” पहल का एक प्रमुख उत्पाद है और आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण का समर्थन करता है।
- BharatFS त्रिकोणीय घन अष्टफलकीय गतिशील ग्रिड का उपयोग करता है, जो 6 किमी के अति-उच्च क्षैतिज स्थानिक रिज़ॉल्यूशन को सक्षम बनाता है - जो परिचालन वास्तविक समय मॉडल के लिए वैश्विक स्तर पर उच्चतम है।
 - यह पूर्ववर्ती GFS T1534 मॉडल (12 किमी रिज़ॉल्यूशन) की तुलना में एक महत्वपूर्ण प्रगति है और 9-14 किमी के बीच संचालित होने वाले अधिकांश अग्रणी वैश्विक मॉडलों से आगे है।

- इसका बेहतर रिज़ॉल्यूशन अत्यधिक स्थानीयकृत पूर्वानुमानों को संभव बनाता है, जिससे आपदा प्रबंधन और कृषि संबंधी निर्णय लेने में पंचायत/ग्राम स्तर तक सहायता मिलती है।

महत्व

- भारत वर्तमान में एकमात्र ऐसा देश है जो इतने उच्च रिज़ॉल्यूशन पर वैश्विक, वास्तविक समय मौसम पूर्वानुमान प्रणाली चला रहा है।
- बेहतर गति और सटीकता (अत्यधिक वर्षा पूर्वानुमानों के लिए सटीकता में 30% तक की वृद्धि के साथ) इसे लघु और मध्यम अवधि के मौसम पूर्वानुमानों के लिए विशेष रूप से मूल्यवान बनाती है।

Source: PIB

प्रोफिलैक्सिस

समाचार में

- हीमोफीलिया देखभाल अब नियमित क्लॉटिंग फैक्टर प्रतिस्थापन या सरल इंजेक्शन के माध्यम से सक्रिय रोकथाम पर केंद्रित है, जिससे जोड़ों का स्वास्थ्य बनाए रखने, विकलांगता रोकने और जीवन की गुणवत्ता सुधारने में सहायता मिलती है—जिसका लक्ष्य है “शून्य रक्तस्राव”।

हीमोफीलिया

- यह एक दुर्लभ रक्तस्राव विकार है जिसमें रक्त सही तरीके से थक्का नहीं बनाता। इससे चोट या सर्जरी के बाद अत्यधिक रक्तस्राव की समस्या हो सकती है।
- हीमोफीलिया के कई प्रकार होते हैं। सबसे सामान्य हैं:
 - हीमोफीलिया A (क्लासिक हीमोफीलिया):** यह क्लॉटिंग फैक्टर VIII की कमी या अनुपस्थिति के कारण होता है।
 - हीमोफीलिया B (क्रिसमस डिजीज़):** यह क्लॉटिंग फैक्टर IX की कमी या अनुपस्थिति के कारण होता है।

भारत में स्थिति

- भारत में अनुमानित 1,00,000–1,50,000 हीमोफीलिया मामलों में से केवल लगभग 20% की ही

पहचान हो पाती है, जिसका कारण है जागरूकता की कमी, सीमित डायग्नोस्टिक सुविधाएं, और सामाजिक-आर्थिक बाधाएं।

- अनुपचारित रक्तस्राव जीवन प्रत्याशा को घटाता है और स्कूल से अनुपस्थिति, बेरोजगारी जैसे गंभीर सामाजिक एवं आर्थिक संकट उत्पन्न करता है।

प्रोफिलैक्सिस की भूमिका

- इसे नियमित प्रतिस्थापन चिकित्सा भी कहा जाता है और यह हीमोफीलिया के लिए स्वर्ण मानक उपचार है।
- इसका उद्देश्य रक्तस्राव की घटनाओं को होने से पहले रोकना है, न कि उन्हें होने के बाद उपचार करना (जैसा कि ऑन-डिमांड थेरेपी में होता है)।
- यह बार-बार क्लॉटिंग फैक्टर के इन्फ्यूजन या नए, आसान सबक्यूटेनियस इंजेक्शन के माध्यम से किया जाता है।

प्रासंगिकता

- प्रोफिलैक्सिस जोड़ों को नुकसान से बचाता है, जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है, और आपातकालीन विजिट और दीर्घकालिक जटिलताओं को कम करके स्वास्थ्य देखभाल का बोझ घटाता है।
- जहाँ विकसित देशों में 90% मरीज प्रोफिलैक्सिस का उपयोग करते हैं, वहीं भारत में अधिकांश अभी भी ऑन-डिमांड थेरेपी पर निर्भर हैं, हालांकि कुछ राज्यों ने 10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए नियमित उपचार शुरू कर दिया है।
 - ▲ विकलांगता रोकने और जीवन सुधारने के लिए नीति और शिक्षा के माध्यम से जागरूकता और पहुंच बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है।

Source :TH

पश्चिमी घाट में नई लाइकेन प्रजाति की खोज

संदर्भ

- पश्चिमी घाट में लाइकेन की एक नई प्रजाति एलोग्राफा इफ्यूसोरेडिका (*Allographa effusosoredica*) की खोज की गई है।

परिचय

- यह नई पहचानी गई प्रजाति एक क्रस्टोज लाइकेन है, जिसकी विशेषता है फैलने वाले सोरेडिया और नॉस्ट्रिक्ट एसिड की उपस्थिति—जो एलोग्राफा वंश में एक दुर्लभ रासायनिक गुण है।
- **महत्त्व:** यह भारत से पुष्टि की गई प्रथम एलोग्राफा प्रजाति है जिसमें आणविक डेटा शामिल है।
- यह खोज अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (ANRF) द्वारा पश्चिमी घाट में लाइकेन सहजीवन पर परियोजना के तहत वित्तपोषित की गई है।

भारत में वर्गीकरण स्थिति

- भारत से रिपोर्ट की गई यह 53वीं एलोग्राफा प्रजाति है।
- पश्चिमी घाट से यह 22वीं प्रजाति है।
- सरकार पश्चिमी घाट जैसे जैव विविधता हॉटस्पॉट में अनुसंधान और संरक्षण प्रयासों को विभिन्न नीतियों, पहलों और वित्तीय योजनाओं के माध्यम से सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रही है।

लाइकेन क्या हैं

- लाइकेन ऐसे जीव होते हैं जो एक कवक और एक शैवाल या सायनोबैक्टीरिया के बीच साझेदारी से बनते हैं।
 - ▲ **कवक:** आश्रय प्रदान करता है और पानी/पोषक तत्वों को अवशोषित करता है।
 - ▲ **शैवाल/सायनोबैक्टीरिया:** प्रकाश संश्लेषण द्वारा भोजन बनाता है।
- **लाइकेन के प्रकार (आकृति के आधार पर)**
 - ▲ **क्रस्टोज:** परत जैसे, सतह से चिपके होते हैं (जैसे ग्राफिस, एलोग्राफा)
 - ▲ **फोलिओज:** पत्तों जैसे, ढीले जुड़े होते हैं (जैसे पारमेलिया)
 - ▲ **फ्रूटिकोज:** झाड़ी जैसे, शाखाओं वाले (जैसे क्लैडोनिया रैंगिफेरिना)
- **पारिस्थितिक और आर्थिक महत्त्व**
 - ▲ **जैव संकेतक:** वायु प्रदूषण (विशेषकर SO₂) के प्रति अत्यंत संवेदनशील।
 - ▲ **मृदा निर्माण:** चट्टानों को एसिड द्वारा तोड़ते हैं।
 - ▲ **भोजन स्रोत:** बारहसिंगा, कीट, घोंघे के लिए।

- ▲ औषधीय/सौंदर्य उपयोग: एंटीबायोटिक्स, रंग, इत्र।
- ▲ जलवायु अध्ययन: लाइकेन की वृद्धि दर का उपयोग लाइकेनोमेट्री में किया जाता है (खुले सतहों की डेटिंग के लिए)।

Source: PIB

कर्नाटक कैबिनेट द्वारा देवदासी पुनर्वास विधेयक को मंजूरी

समाचार में

- कर्नाटक मंत्रिमंडल ने देवदासी प्रथा के विरुद्ध प्रयासों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से कर्नाटक देवदासी (रोकथाम, निषेध, राहत और पुनर्वास) विधेयक, 2025 को मंजूरी दे दी है।

देवदासी पुनर्वास विधेयक

- यह 1982 के अधिनियम को प्रतिस्थापित करेगा और इसमें देवदासियों एवं उनके बच्चों की गरिमा की रक्षा के प्रावधान शामिल हैं, जैसे आधिकारिक दस्तावेजों पर पिता के नाम की अनिवार्य घोषणा को हटाना और डीएनए-आधारित पहचान की अनुमति देना।
- यह न केवल निषेध को संबोधित करके, बल्कि देवदासियों को राहत और पुनर्वास प्रदान करके, अधिक समावेशी कानून की लंबे समय से चली आ रही मांगों को पूरा करते हुए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाता है।

देवदासी प्रथा

- यह चोल, चेर और पांड्य राजवंशों से चली आ रही एक प्राचीन प्रथा है, जिसमें निम्न जाति की युवा लड़कियों को मंदिर के देवताओं को समर्पित किया जाता था।
- यद्यपि इन्हें “भगवान की सेविका” कहा जाता है, ये लड़कियाँ प्रायः मंदिर के संरक्षकों और शक्तिशाली पुरुषों को यौन सेवाएँ प्रदान करती हैं।
- यह प्रणाली पूरे भारत में विभिन्न क्षेत्रीय नामों के अंतर्गत कायम है, जैसे नातिस (असम), महारिस (केरल), बसवी/जोगती (कर्नाटक), जोगिन (आंध्र प्रदेश), और अराधिनी (महाराष्ट्र)।

Source :TH

कोलोराडो नदी

संदर्भ

- लाखों लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण जल स्रोत, कोलोराडो नदी, अपने प्रवाह में कमी के कारण संकट का सामना कर रही है, जिससे राज्य भविष्य के जल अधिकारों के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

परिचय

- कोलोराडो नदी पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका और उत्तरी मेक्सिको की सबसे महत्वपूर्ण नदियों में से एक है - पारिस्थितिक एवं आर्थिक दोनों दृष्टि से।
- यह विश्व की सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली और संकटग्रस्त जल प्रणालियों में से एक है।
- स्रोत: रॉकी पर्वत, कोलोराडो (ला पौड्रे दरी)।
- मुहाना: कैलिफ़ोर्निया की खाड़ी, मेक्सिको (हालाँकि अत्यधिक जल उपयोग के कारण अब यह शायद ही कभी समुद्र तक पहुँचती है)।
- इसका जल निकासी बेसिन 246,000 वर्ग मील (637,000 वर्ग किलोमीटर) में फैला है और इसमें सात राज्यों - व्योमिंग, कोलोराडो, यूटा, न्यू मैक्सिको, नेवादा, एरिज़ोना एवं कैलिफ़ोर्निया के हिस्से शामिल हैं।



Source: DTE